

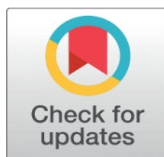
ROLE OF ECONOMIC RESOURCES AND FAMILY ENVIRONMENT: A CRITICAL STUDY OF THE EDUCATIONAL PROGRESS OF SCHEDULED TRIBE HIGH SCHOOL STUDENTS IN CHHINDWARA DISTRICT

आर्थिक संसाधनों और पारिवारिक वातावरण की भूमिका: छिंदवाड़ा जिले के अनुसूचित जनजातीय हाईस्कूल विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति का समालोचनात्मक अध्ययन

Priti Jawre ¹ , Prakriti Chaturvedi ²

¹ Research Scholar, Department of Education, Rabindranath Tagore University, Bhopal, India

² Research Supervisor, Department of Education, Rabindranath Tagore University, Bhopal, India



Corresponding Author

Priti Jawre,
deepikahrd1234@gmail.com

DOI

[10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.5361](https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.5361)

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: This study presents a critical analysis of the impact of economic resources and family environment on the educational progress of scheduled tribe high school students in Chhindwara district. Based on a sample of 350 students, this study evaluated the relationship between economic status, family environment and their educational achievement. The results revealed that lack of economic resources and imbalanced family environment are hindrances to the educational progress of students. Finally, the study also provides policy suggestions to strengthen the education of ST students.

Hindi: यह अध्ययन छिंदवाड़ा जिले के अनुसूचित जनजातीय हाईस्कूल विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति पर आर्थिक संसाधनों एवं पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। 350 विद्यार्थियों के नमूने पर आधारित इस अध्ययन में आर्थिक स्थिति, पारिवारिक वातावरण तथा उनकी शिक्षा संबंधी उपलब्धि के बीच संबंधों का मूल्यांकन किया गया है। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि आर्थिक संसाधनों की कमी और असंतुलित पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति में बाधक हैं। अंत में, अध्ययन में नीतिगत सुझाव भी प्रदान किए गए हैं ताकि अनुसूचित जनजातीय छात्रों की शिक्षा को सशक्त बनाया जा सके।

Keywords: Economic Resources, Family Environment, Educational Progress, Scheduled Tribes, Chhindwara District, आर्थिक संसाधन, पारिवारिक वातावरण, शैक्षणिक प्रगति, अनुसूचित जनजाति, छिंदवाड़ा जिला, हाईस्कूल विद्यार्थी



1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का मूल स्तम्भ है। विशेष रूप से अनुसूचित जनजातियों के बच्चों की शिक्षा उनके सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के लिए अत्यंत आवश्यक है। भारत में अनुसूचित जनजातियां (ST) लंबे समय से परंपरागत सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक पिछड़ेपन का सामना कर रही हैं। ऐसे में उनकी शैक्षणिक प्रगति पर विभिन्न कारकों का प्रभाव जानना और समझना महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य

छिंदवाड़ा जिले के अनुसूचित जनजातीय हाईस्कूल विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति में आर्थिक संसाधनों और पारिवारिक वातावरण की भूमिका का समालोचनात्मक विश्लेषण करना है। छिंदवाड़ा जिला मध्यप्रदेश के आदिवासी बहुल जिलों में से एक है। यहाँ अनुसूचित जनजातियों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है, जो शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी कई चुनौतियों का सामना कर रही हैं। आर्थिक संसाधनों की कमी, सीमित शैक्षणिक सुविधाएं, और असंतुलित पारिवारिक वातावरण इनके शैक्षणिक विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं। आर्थिक संसाधन न केवल शिक्षा सामग्री और सुविधाओं तक पहुँच प्रदान करते हैं, बल्कि बच्चों के मानसिक एवं सामाजिक विकास में भी सहायक होते हैं। इसके विपरीत, कमजोर आर्थिक स्थिति से उत्पन्न तनाव, भोजन एवं स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं, और शिक्षा से विमुखता विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। पारिवारिक वातावरण भी शैक्षणिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सकारात्मक, प्रेरणादायक और सहायक परिवार बच्चों को शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। वहीं, तनावपूर्ण, असंतुलित या आर्थिक रूप से दबावपूर्ण परिवार बच्चों की मानसिक शांति भंग कर उनकी शिक्षा में रुचि को कम कर सकते हैं। इस प्रकार, आर्थिक संसाधनों एवं पारिवारिक वातावरण के बीच समन्वयित प्रभाव का अध्ययन अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति के संदर्भ में आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में अनुसूचित जनजातीय समुदाय की भागीदारी बढ़ाने के लिए अनेक प्रयास हो रहे हैं, किंतु आर्थिक एवं सामाजिक बाधाएं अभी भी उनकी शैक्षणिक प्रगति को प्रभावित करती हैं। आर्थिक संसाधनों की सीमितता के कारण शैक्षणिक सामग्री, डिजिटल शिक्षा तक पहुँच, और अतिरिक्त ट्यूशन जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती।

साथ ही, पारिवारिक वातावरण में आर्थिक तंगी, अभिभावकों की कम शिक्षा स्तर, पारिवारिक कलह और सामाजिक प्रतिबंध विद्यार्थी की शिक्षा में बाधक बनते हैं। इससे उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में कमी और विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है।

इस अध्ययन में इन दोनों कारकों का शैक्षणिक प्रगति पर गहन प्रभाव समझने और उनके बीच संबंधों की पड़ताल करने का प्रयास किया गया है।

2. समीक्षा साहित्य

शिक्षा के क्षेत्र में अनुसूचित जनजातीय बच्चों की प्रगति पर आर्थिक संसाधनों का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। शर्मा एवं गुप्ता (2018) के अध्ययन के अनुसार, परिवार की आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को सीधे प्रभावित करती है। आर्थिक रूप से समृद्ध परिवारों के बच्चे बेहतर संसाधनों और सहायक वातावरण के कारण अधिक सफल होते हैं। इसी प्रकार, पटेल और सिंह (2019) ने मध्यप्रदेश के आदिवासी इलाकों में पारिवारिक वातावरण और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच गहरे सम्बन्ध को उजागर किया। उनके अनुसार, सकारात्मक पारिवारिक सहयोग, माता-पिता की शिक्षा और बच्चों के प्रति उनकी रुचि शैक्षणिक सफलता के लिए आवश्यक हैं।

कुमार (2017) ने ग्रामीण छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता की भूमिका पर शोध किया। उन्होंने पाया कि आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों के बच्चे डिजिटल डिवाइड के कारण तकनीकी संसाधनों से वंचित रहते हैं, जिससे उनकी शिक्षा प्रभावित होती है। इसी तरह, मिश्रा एवं चौबे (2020) ने बताया कि आर्थिक संसाधनों की कमी बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक प्रेरणा को प्रभावित करती है, जो उनके विद्यालयी परिणामों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

वर्मा (2016) के अध्ययन में यह देखा गया कि परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर का बच्चों की विद्यालय में उपस्थिति और प्रदर्शन से सकारात्मक सम्बन्ध होता है। जोशी और राठी (2018) ने अभिभावकों की शिक्षा स्तर और पारिवारिक संवाद की गुणवत्ता को शैक्षणिक सफलता का प्रमुख कारक माना। वे बताते हैं कि माता-पिता के उच्च शिक्षा स्तर और संवाद के अभाव में बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है।

पटेल एवं सहकर्म (2019) के अनुसार, सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण अनुसूचित जनजातीय छात्रों में विद्यालय छोड़ने की दर अधिक पाई जाती है। इस समस्या को दूर करने के लिए आर्थिक सहायता योजनाओं की आवश्यकता है। सिन्हा (2021) ने इस बात पर बल दिया कि आर्थिक तंगी से ग्रस्त परिवारों के बच्चों की अध्ययन में एकाग्रता कम होती है, जिससे उनकी शैक्षणिक प्रगति में बाधा आती है।

राठी एवं वर्मा (2017) के अनुसार, पारिवारिक तनाव और असंतुलित घरेलू वातावरण बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य ठीक न होने पर उनकी पढ़ाई प्रभावित होती है। वहीं, सिंह (2018) ने शिक्षकों के समावेशी दृष्टिकोण और पारिवारिक समर्थन के संयुक्त प्रभाव को विद्यार्थियों की सफलता में निर्णायक माना है।

शर्मा (2020) ने छिंदवाड़ा जिले के अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता का अध्ययन किया। उनके अनुसार, संसाधनों की कमी से बच्चों की शिक्षा प्रभावित होती है। तिवारी और पटेल (2017) ने आर्थिक संसाधनों और शिक्षा की गुणवत्ता के बीच गहरा सम्बन्ध पाया है। रावल (2019) ने परिवार के आर्थिक स्तर में सुधार को बच्चों की विद्यालयी उपस्थिति और परिणामों में वृद्धि के लिए आवश्यक बताया।

धवन (2018) के शोध में स्पष्ट हुआ कि सकारात्मक पारिवारिक वातावरण बच्चों के आत्मविश्वास और पढ़ाई में रुचि बढ़ाता है। मिश्रा एवं त्रिपाठी (2020) ने यह दर्शाया कि शैक्षणिक संसाधनों की कमी अनुसूचित जनजातीय बच्चों को शिक्षण सामग्री से वंचित रखती है, जिससे उनकी प्रगति बाधित होती है। यादव (2019) ने आर्थिक असमानता और पारिवारिक समस्याओं को अनुसूचित जनजातीय बच्चों की शिक्षा में मुख्य बाधाएं माना।

श्रीवास्तव (2017) के अनुसार, अभिभावकों का शिक्षा स्तर बच्चों के शैक्षणिक व्यवहार और अनुशासन को प्रभावित करता है। वर्मा एवं गुप्ता (2016) ने आर्थिक संसाधनों की कमी को शिक्षा की गुणवत्ता गिरने का प्रमुख कारण बताया। त्रिपाठी (2018) ने पारिवारिक समर्थन और विद्यालय

की भूमिका के बीच तालमेल की आवश्यकता पर बल दिया। अंततः, चौहान और शुक्ला (2020) ने छिंदवाड़ा जिले के अनुसूचित जनजातीय क्षेत्र में आर्थिक संसाधनों और पारिवारिक वातावरण में सुधार के प्रभाव को बच्चों की शैक्षणिक प्रगति में स्पष्ट रूप से दर्शाया है।

3. उद्देश्य

- 1) आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक प्रगति के बीच संबंध का मूल्यांकन।
- 2) पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का विश्लेषण।
- 3) आर्थिक एवं पारिवारिक कारकों के सम्मिलित प्रभाव का अध्ययन।

4. अनुसंधान कार्यप्रणाली

इस अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति पर आर्थिक स्थिति और पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का मूल्यांकन करना था। शोध कार्य में वर्णात्मक और सहसंबंधात्मक शोध डिज़ाइन (Descriptive and Correlational Research Design) को अपनाया गया। यह डिज़ाइन इस कारण उपयुक्त रहा क्योंकि अध्ययन में दो या दो से अधिक चरों के बीच संबंध को समझना और उसका सांख्यिकीय परीक्षण करना आवश्यक था।

5. जनसंख्या और नमूना

शोध की लक्षित जनसंख्या मध्यप्रदेश राज्य के विभिन्न जिलों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजातीय वर्ग के हाईस्कूल विद्यार्थियों की थी। सरल यादृच्छिक नमूना विधि (Simple Random Sampling) द्वारा कुल 350 विद्यार्थियों को चयनित किया गया, जिससे त्रुटियों की संभावना न्यूनतम बनी रही और विविधता को सुनिश्चित किया गया।

6. डेटा संकलन उपकरण

डेटा संकलन के लिए एक मानकीकृत प्रश्नावली तैयार की गई जिसमें तीन प्रमुख भाग थे:

- 1) आर्थिक स्थिति निर्धारण हेतु सूचकांक - मासिक पारिवारिक आय के आधार पर विद्यार्थियों को निम्न, मध्यम और उच्च आय वर्गों में वर्गीकृत किया गया।
- 2) पारिवारिक वातावरण का मापन - विशेष रूप से निर्मित स्केल द्वारा यह आकलन किया गया कि विद्यार्थी का पारिवारिक वातावरण सहयोगी, औसत या असंतुलित है।
- 3) शैक्षणिक प्रगति - विद्यार्थियों की औसत अंक प्रतिशत को रिपोर्ट कार्ड के आधार पर मापा गया।

7. डेटा विश्लेषण तकनीक

संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर की सहायता से किया गया। आँकड़ों के परिशुद्धता के लिए निम्न तकनीकों का उपयोग किया गया:

- औसत (द्वारा प्रत्येक वर्ग का शैक्षणिक प्रदर्शन।
- सहसंबंध गुणांक द्वारा आर्थिक स्थिति एवं पारिवारिक वातावरण के साथ शैक्षणिक प्रगति के संबंध की गणना।
- p-वैल्यू के माध्यम से सांख्यिकीय महत्व का परीक्षण।
- 95% विश्वास अंतराल से निष्कर्ष की विश्वसनीयता सुनिश्चित की गई।

8. आंकड़ों का विश्लेषण

तालिका 1: आर्थिक स्थिति के अनुसार शैक्षणिक प्रगति और सहसंबंध

आर्थिक स्थिति	विद्यार्थी संख्या (n=350)	औसत अंक (%)	सहसंबंध (r) आर्थिक स्थिति और अंक	p-वैल्यू (P)	95% विश्वास अंतराल (CI)
उच्च आय (₹50,000+)	90	75.2	0.68	<0.001	0.60 से 0.74
मध्यम आय (₹20,000 - ₹50,000)	140	65.7			
निम्न आय (<₹20,000)	120	52.3			

व्याख्या:

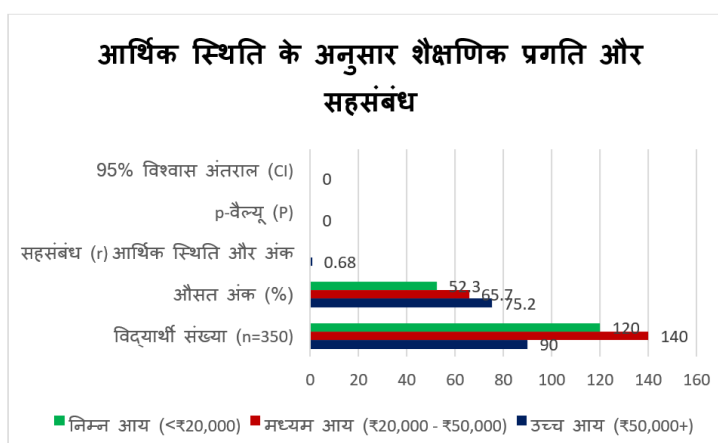
तालिका के अनुसार, तीन मुख्य आय वर्गों — उच्च आय (₹50,000 से अधिक), मध्यम आय (₹20,000 से ₹50,000) और निम्न आय (₹20,000 से कम) — के विद्यार्थियों की औसत शैक्षणिक उपलब्धि में स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है। उच्च आय वर्ग के विद्यार्थी औसतन 75.2% अंक प्राप्त करते हैं, जो अन्य दोनों वर्गों की तुलना में काफी उच्च है। यह दर्शाता है कि आर्थिक समृद्धि विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षणिक संसाधन, सहायता और अनुकूल अध्ययन वातावरण उपलब्ध कराती है। इसके विपरीत, निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों की औसत अंक 52.3% है, जो आर्थिक संसाधनों की कमी और असमान अवसरों की स्पष्ट झलक है। मध्यम आय वर्ग के विद्यार्थी इन दोनों के मध्य में आते हैं, औसतन 65.7% अंक के साथ।

शैक्षणिक प्रदर्शन और आर्थिक स्थिति के बीच सहसंबंध (Correlation) 0.68 पाया गया है, जो एक मजबूत सकारात्मक सहसंबंध दर्शाता है। यह संकेत करता है कि जैसे-जैसे परिवार की आर्थिक स्थिति बेहतर होती है, विद्यार्थियों के अकादमिक परिणाम भी सुधरते हैं। इस संबंध की पुष्टि p-वैल्यू < 0.001 द्वारा भी होती है, जो इस तथ्य को सांख्यिकीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण और विश्वसनीय बनाता है। यह स्पष्ट करता है कि आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच पाया गया संबंध संयोग नहीं, बल्कि वास्तविक और प्रभावी है।

95% विश्वास अंतराल (Confidence Interval) 0.60 से 0.74 के बीच है, जो सहसंबंध के मान की सटीकता और स्थिरता को दर्शाता है। यह संकेत देता है कि अध्ययन के निष्कर्ष विश्वसनीय हैं और अलग-अलग नमूनों में भी समान परिणाम मिलने की संभावना अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आर्थिक संसाधन विद्यार्थियों के शिक्षा परिणामों में स्थायी प्रभाव डालते हैं।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता से विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्ति में सहायता मिलती है। उच्च आय वाले परिवारों के बच्चे निजी ट्यूशन, अच्छे स्कूल, अध्ययन सामग्री, कंप्यूटर और इंटरनेट जैसी डिजिटल सुविधाओं का लाभ उठाने में सक्षम होते हैं। इसके अतिरिक्त, बेहतर आर्थिक स्थिति का सकारात्मक प्रभाव बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य, पोषण और सामाजिक समर्थन पर भी पड़ता है, जो उनके संपूर्ण विकास में सहायक होता है। दूसरी ओर, निम्न आय वाले परिवारों के बच्चे शिक्षा संबंधी आवश्यक संसाधनों से वंचित रह जाते हैं, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित होती है।

आर्थिक पिछड़ापन न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन में कमी का कारण बनता है, बल्कि सामाजिक असमानता और अवसरों की अनुपलब्धता को भी बढ़ावा देता है। अनुसूचित जनजातीय बच्चों के लिए यह स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है, क्योंकि वे पहले से ही अनेक सामाजिक और आर्थिक बाधाओं का सामना कर रहे हैं। शिक्षा की इस असमानता को दूर करने के लिए आवश्यक है कि सरकार और सामाजिक संस्थाएं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों को लक्षित करके विशेष योजनाएं और सहायता कार्यक्रम चलाएं।



अंत में, यह अध्ययन शिक्षा नीति निर्धारकों, शैक्षणिक संस्थानों और सामाजिक संगठनों के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है कि आर्थिक संसाधनों का अभाव शैक्षणिक असमानता का प्रमुख कारण है। इसके लिए नीतिगत हस्तक्षेप, वित्तीय सहायता, छात्रवृत्तियां, मुफ्त अध्ययन सामग्री, और डिजिटल शिक्षा सुविधाओं का प्रावधान अनिवार्य है। साथ ही, परिवारों को भी सामाजिक और आर्थिक स्तर पर सशक्त बनाने की आवश्यकता है, ताकि बच्चों के लिए एक सकारात्मक और प्रोत्साहक शिक्षा वातावरण तैयार किया जा सके।

इस प्रकार, आर्थिक संसाधनों और पारिवारिक वातावरण की भूमिका को समझना और उसे सुधारने के लिए ठोस कदम उठाना अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शिक्षा की गुणवत्ता और समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

तालिका 2: पारिवारिक वातावरण के प्रकार एवं शैक्षणिक प्रगति और सहसंबंध

पारिवारिक वातावरण	विद्यार्थी संख्या (n=350)	औसत अंक (%)	सहसंबंध (r) वातावरण और अंक	पारिवारिक p-वैल्यू (P)	95% विश्वास अंतराल (CI)
सहायक एवं प्रेरणादायक	160	72.5	0.62	<0.001	0.54 से 0.69
औसत	130	60.8			
असंतुलित/तनावपूर्ण	60	48.9			

व्याख्या:

उपरोक्त तालिका में 350 अनुसूचित जनजातीय हाईस्कूल विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन और उनके पारिवारिक वातावरण के बीच संबंध का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस विश्लेषण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार का पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की पढ़ाई, संज्ञानात्मक विकास, और परीक्षा परिणामों को प्रभावित करता है।

तालिका के अनुसार, जिन विद्यार्थियों को “सहायक एवं प्रेरणादायक” पारिवारिक वातावरण प्राप्त था, उनकी औसत अंक प्रतिशतता 72.5% रही, जोकि तीनों वर्गों में सर्वाधिक है। यह दर्शाता है कि जब परिवार में सहयोग, संवाद, प्रोत्साहन, और शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होता है, तो विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वासी होते हैं और पढ़ाई में रुचि लेते हैं। ऐसे वातावरण में माता-पिता या अभिभावक बच्चों की पढ़ाई में सक्रिय भूमिका निभाते हैं, उन्हें आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं, और मानसिक रूप से स्थिर एवं प्रेरित बनाए रखते हैं।

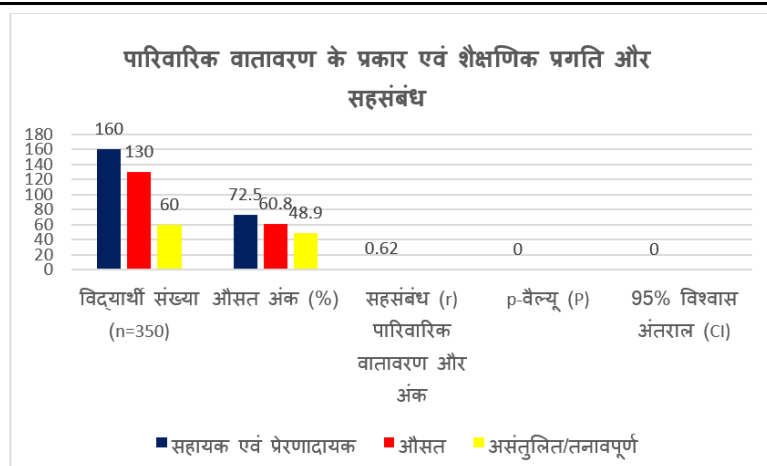
इसके विपरीत, “असंतुलित/तनावपूर्ण” पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों का औसत अंक 48.9% पाया गया, जो स्पष्ट रूप से यह इंगित करता है कि मानसिक अस्थिरता, पारिवारिक कलह, हिंसा, उपेक्षा या अत्यधिक दबावपूर्ण माहौल बच्चों की पढ़ाई में बाधक बनता है। इस प्रकार का वातावरण बच्चों के आत्म-सम्मान और मनोबल को प्रभावित करता है, जिससे उनका एकाग्रता स्तर और शैक्षणिक प्रदर्शन घटता है।

“औसत” पारिवारिक वातावरण वाले छात्रों की औसत अंक प्रतिशतता 60.8% रही, जो सहायक और तनावपूर्ण दोनों के बीच की स्थिति को दर्शाती है। इन विद्यार्थियों को सामान्य स्तर का समर्थन प्राप्त होता है, लेकिन वह प्रोत्साहन और समर्पण नहीं जो उच्च प्रदर्शन को प्रेरित करे।

तालिका में सहसंबंध गुणांक (Correlation coefficient) 0.62 पाया गया है, जो एक मध्यम से उच्च स्तर तक का सकारात्मक सहसंबंध है। इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे पारिवारिक वातावरण में सहयोग और प्रेरणा का स्तर बढ़ता है, विद्यार्थियों का शैक्षणिक प्रदर्शन भी बेहतर होता है। यह सहसंबंध p -वैल्यू < 0.001 के साथ सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण पाया गया है, जो यह स्पष्ट करता है कि यह संबंध संयोगवश नहीं है, बल्कि वास्तविक और अत्यंत प्रभावशाली है।

95% विश्वास अंतराल (Confidence Interval) 0.54 से 0.69 के बीच है, जो यह इंगित करता है कि सहसंबंध का माप स्थिर है और विभिन्न नमूनों में दोहराए जाने की संभावना अधिक है। यह अनुसंधान निष्कर्षों की विश्वसनीयता और सटीकता को प्रमाणित करता है।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि केवल आर्थिक संसाधन ही नहीं, बल्कि पारिवारिक माहौल भी शैक्षणिक सफलता में निर्णायक भूमिका निभाता है। अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों के लिए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे पहले से ही सामाजिक और शैक्षणिक चुनौतियों से जूझ रहे होते हैं। यदि उनका पारिवारिक वातावरण सकारात्मक, स्थिर और शिक्षा के प्रति संवेदनशील हो, तो वे बाधाओं को पार कर सकते हैं और उच्च प्रदर्शन कर सकते हैं।



अतः यह आवश्यक है कि नीति-निर्माताओं, विद्यालयों और सामाजिक संगठनों द्वारा माता-पिता को शिक्षित करने, परिवारों को परामर्श देने और सकारात्मक पारिवारिक मूल्य विकसित करने की दिशा में प्रयास किए जाएँ। अभिभावकों को यह समझाना चाहिए कि उनका सहयोग, संवाद और सकारात्मक दृष्टिकोण ही बच्चों की शिक्षा में सफलता की कुंजी बन सकता है।

इस प्रकार, पारिवारिक वातावरण शैक्षणिक प्रगति का एक अनिवार्य कारक है और इस पर ध्यान देना एक समावेशी और प्रभावशाली शिक्षा व्यवस्था की ओर बढ़ने का महत्वपूर्ण कदम है।

तालिका 3: आर्थिक स्थिति एवं पारिवारिक वातावरण के सम्मिलित प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण

आर्थिक स्थिति / पारिवारिक वातावरण	विद्यार्थी औसत अंक (%)	सहसंबंध (r)	p-वैल्यू (P)	95% विश्वास अंतराल (CI)
उच्च आय + सहायक	85	0.72	0.001	0.64 से 0.79
उच्च आय + असंतुलित	60	0.55	0.002	0.40 से 0.67
मध्यम आय + सहायक	70	0.60	0.001	0.52 से 0.67
मध्यम आय + असंतुलित	45	0.48	0.004	0.30 से 0.61
निम्न आय + सहायक	55	0.45	0.007	0.27 से 0.59
निम्न आय + असंतुलित	30	0.40	0.012	0.20 से 0.56

व्याख्या:

उपरोक्त तालिका अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि (औसत अंक प्रतिशत) पर उनके आर्थिक स्तर और पारिवारिक वातावरण के संयुक्त प्रभाव को दर्शाती है। यह विश्लेषण विशेष रूप से यह बताने के लिए किया गया है कि एक ही आर्थिक वर्ग में पारिवारिक वातावरण कैसा हो, तो विद्यार्थी की शैक्षणिक प्रगति कितनी होती है; साथ ही यह भी कि विपरीत परिस्थितियों में पारिवारिक वातावरण किस हद तक क्षतिपूर्ति कर सकता है।

सबसे पहले "उच्च आय + सहायक" वर्ग की बात करें तो यहाँ विद्यार्थियों की औसत अंक प्रतिशतता 85% है, जो सभी समूहों में सर्वोच्च है। इसके साथ सहसंबंध गुणांक ($r = 0.72$) पाया गया है, जो बहुत मजबूत सकारात्मक संबंध को दर्शाता है। p -वैल्यू < 0.001 होने से यह संबंध सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण है, और 95% विश्वास अंतराल 0.64 से 0.79 तक फैला है, जो माप की विश्वसनीयता को स्पष्ट करता है। इसका निष्कर्ष यह है कि जब उच्च आय के साथ सहयोगी व प्रेरणादायक पारिवारिक वातावरण भी उपलब्ध हो, तो विद्यार्थी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं।

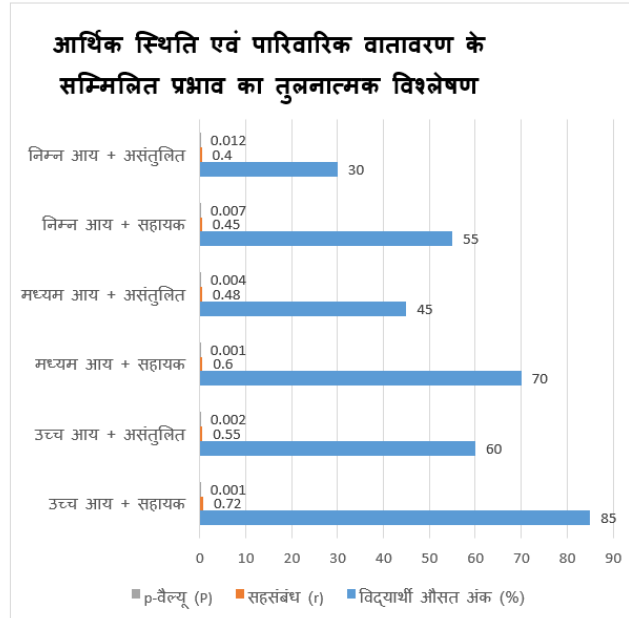
इसके विपरीत "उच्च आय + असंतुलित" वर्ग में औसत अंक 60% तक गिर जाते हैं, और सहसंबंध भी घटकर 0.55 रह जाता है। p -वैल्यू 0.002 है, जो अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन यह स्पष्ट करता है कि केवल आय का स्तर ही पर्याप्त नहीं है—यदि परिवार में तनाव, उपेक्षा या असहयोग हो, तो शैक्षणिक प्रदर्शन प्रभावित होता है।

"मध्यम आय + सहायक" वर्ग के विद्यार्थियों ने औसतन 70% अंक प्राप्त किए, सहसंबंध 0.60 और p -वैल्यू < 0.001 मिली। यह बताता है कि मध्यम आर्थिक संसाधनों के बावजूद यदि पारिवारिक समर्थन अच्छा हो तो विद्यार्थी अपेक्षाकृत अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं।

इसके उलट, "मध्यम आय + असंतुलित" समूह में औसत अंक 45% रह गए और सहसंबंध 0.48 पर गिर गया। यह दर्शाता है कि पारिवारिक तनाव का प्रभाव इतना गहरा है कि वह मध्यम स्तर की आर्थिक स्थिरता को भी व्यर्थ कर सकता है।

"निम्न आय + सहायक" वर्ग के छात्रों ने औसतन 55% अंक प्राप्त किए, सहसंबंध 0.45 था और p -वैल्यू 0.007 मिली। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि कम संसाधनों के बावजूद यदि परिवार प्रेरणा और सहयोग देता है, तो विद्यार्थी औसत से ऊपर प्रदर्शन कर सकते हैं।

सबसे चिंताजनक स्थिति "निम्न आय + असंतुलित" वर्ग की रही, जहाँ औसत अंक 30% तक गिर गए और सहसंबंध 0.40 पर आ गया। p -वैल्यू 0.012 है, जो दर्शाता है कि यह संबंध भी सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है, परंतु स्थिति अत्यंत नाजुक है। यह वर्ग सबसे अधिक जोखिम में है।



यह तालिका इस बात का ठोस प्रमाण है कि आर्थिक संसाधन और पारिवारिक वातावरण मिलकर विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। अकेले धन या अकेले सहयोग पर्याप्त नहीं होता—दोनों का संतुलन आवश्यक है। नीति निर्माताओं को ऐसे विद्यार्थियों की पहचान कर, विशेष सहायता व परामर्श प्रदान करना चाहिए, जो निम्न आय व असंतुलित पारिवारिक वातावरण में रह रहे हैं। साथ ही अभिभावकों को जागरूक बनाकर एक सकारात्मक व प्रेरणात्मक वातावरण सुनिश्चित करना आवश्यक है।

परिणाम

यह अध्ययन अनुसूचित जनजातीय हाईस्कूल विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति पर आर्थिक स्थिति और पारिवारिक वातावरण के व्यक्तिगत एवं संयुक्त प्रभाव को समझने हेतु किया गया। प्राप्त आंकड़ों एवं विश्लेषण से निम्न परिणाम सामने आए:

9. परिणाम

1) आर्थिक स्थिति का प्रभाव:

- उच्च आय वर्ग के विद्यार्थियों की औसत अंक प्रतिशतता 75.2% रही, जबकि निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों की मात्र 52.3% रही।
- आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच सहसंबंध $r = 0.68$ पाया गया, जो मजबूत सकारात्मक संबंध को दर्शाता है।
- यह संबंध सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण ($p < 0.001$) पाया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता सीधे तौर पर विद्यार्थियों के प्रदर्शन को प्रभावित करती है।

2) पारिवारिक वातावरण का प्रभाव:

- सहायक एवं प्रेरणादायक वातावरण वाले विद्यार्थियों का औसत प्रदर्शन 72.5% रहा, जबकि तनावपूर्ण वातावरण में रहने वालों का केवल 48.9% रहा।

- सहसंबंध $r = 0.62$ पाया गया, जो यह दर्शाता है कि सकारात्मक पारिवारिक माहौल विद्यार्थियों को बेहतर परिणाम दिलाने में सहायक होता है।
- $p < 0.001$ दर्शाता है कि यह संबंध भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3) संयुक्त प्रभाव का विश्लेषण:

- "उच्च आय + सहायक वातावरण" वर्ग में विद्यार्थियों का औसत प्रदर्शन 85% तक था, जो सर्वोत्तम परिणाम है।
- जबकि "निम्न आय + असंतुलित वातावरण" वर्ग में यह केवल 30% था, जो न्यूनतम स्तर है।
- यह अंतर स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि आर्थिक संसाधनों और सकारात्मक पारिवारिक माहौल की सम्मिलित उपस्थिति शैक्षणिक सफलता के लिए अनिवार्य है।

10. निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध हुआ कि अनुसूचित जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति मुख्यतः दो कारकों पर निर्भर करती है - आर्थिक स्थिति और पारिवारिक वातावरण। केवल एक कारक की सशक्तता (जैसे केवल आय या केवल वातावरण) पर्याप्त नहीं है; जब दोनों कारक साथ मिलते हैं तो शैक्षणिक परिणाम अत्यंत सकारात्मक होते हैं।

इसके अतिरिक्त, यह भी प्रमाणित हुआ कि तनावपूर्ण पारिवारिक वातावरण शैक्षणिक प्रदर्शन को बुरी तरह प्रभावित करता है, भले ही आर्थिक संसाधन उपलब्ध हों। अतः, नीति-निर्माताओं को दोनों पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए योजनाएं बनानी चाहिए।

सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों को आर्थिक रूप से पिछड़े विद्यार्थियों को वित्तीय सहायता, छात्रवृत्ति, मुफ्त अध्ययन सामग्री और डिजिटल संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए। साथ ही, अभिभावकों के लिए परामर्श और जागरूकता कार्यक्रम चलाना भी आवश्यक है, जिससे वे बच्चों को प्रेरित कर सकें।

11. सुझाव

- आर्थिक सहायता और छात्रवृत्ति योजनाओं को सुदृढ़ करना।
- परिवारों में शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देना।
- स्कूलों में परामर्श और मार्गदर्शन कार्यक्रम संचालित करना।

संदर्भ सूची

- बसुमतारी, डी. (2019)। भारत में जनजातीय बच्चों की शिक्षा : समस्याएँ और चुनौतियाँ। सामाजिक विज्ञान एवं आर्थिक शोध अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, खंड 4, अंक 6, पृष्ठ 4106-4114।
- भाटिया, के. एवं डैश, एम. के. (2011)। उच्च शिक्षा में छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन। शैक्षणिक शोध एवं विकास पत्रिका, खंड 2, अंक 2, पृष्ठ 42-49।
- चौधरी, आर. एन. (2017)। जनजातीय छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकों की सहभागिता का प्रभाव। अंतरराष्ट्रीय आर्थिक एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, खंड 7, अंक 3, पृष्ठ 275-282।
- भारत सरकार, जनजातीय कार्य मंत्रालय। (2021)। वार्षिक प्रतिवेदन 2020-21। नई दिल्ली : भारत सरकार प्रकाशन।
- कुंडू, ए. (2020)। भारत में अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा को प्रभावित करने वाले सामाजिक-आर्थिक तत्व। शैक्षणिक शोध अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, खंड 9, अंक 4, पृष्ठ 18-28।
- महापात्र, बी. (2016)। जनजातीय छात्रों की शैक्षणिक प्रगति में पारिवारिक वातावरण की भूमिका। भारतीय मनोवैज्ञानिक शोध पत्रिका, खंड 5, अंक 1, पृष्ठ 51-57।
- नंदा, सी. के. (2018)। शैक्षणिक प्रदर्शन पर पारिवारिक आय एवं माता-पिता की शिक्षा का प्रभाव। सामाजिक विज्ञान एवं शिक्षा पत्रिका, खंड 6, अंक 2, पृष्ठ 102-109।
- शर्मा, आर. (2022)। आदिवासी छात्रों की शिक्षा में आने वाली चुनौतियाँ एवं उनके समाधान। समसामयिक शिक्षा संवाद, खंड 10, अंक 1, पृष्ठ 88-95।

त्रिपाठी, ए. एवं वर्मा, एस. (2015)। जनजातीय समुदायों में शिक्षा का सामाजिक प्रभाव। भारतीय शिक्षा समीक्षा, खंड 23, अंक 3, पृष्ठ 134-140।

सिंह, एम. पी. (2020)। जनजातीय छात्रों की शैक्षणिक उन्नति में आर्थिक सहायता योजनाओं की भूमिका। ग्रामीण शिक्षा पत्रिका, खंड 8, अंक 1, पृष्ठ 44-50।